CHAPTER 38

MUSIC

Doctoral Theses

01. अधिकारी (नीलम)
हिन्दुस्तानी संगीत में संस्कृत ग्रंथों की भूमिका एवं उपयोगिता : एक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सुनंदा पाठक एवं प्रो. (श्रीमती) अनुपम महाजन
Th 24607

सरांश
(असत्यापित)

संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथ रत्नों का सागर है। ग्रंथों से तात्पर्य ऐसे अमूल्य उल्लेखों से है जिसके अंतर्गत आंशिक एवं पूर्ण रूप से विषय से संबंधित ज्ञान उपलब्ध होता है तथा जिनके अध्ययन से हम वर्तमान परिस्थितियों की तुलना इतिहास में घटित घटनाओं से कर सकते हैं। संस्कृत में रचित पूर्व ग्रंथों का विश्लेषाणात्मक अध्ययन तथा उसमें प्रस्तुत विषयों का अधुना प्रचलित भाषाओं में अनुवादए परिशीलन तथा तुलनात्मक अध्ययन किसी भी देश की कला व संस्कृति की मौलिकता एवं प्राचीनता को प्रमाणित करती है। इसलिए कहा जा सकता है कि संस्कृत गंथ भारतीय संगीत एवं संस्कृति का आधार है। आज संगीत के सभी तत्व चाहे वह पारिभाषिक शब्द हों या रागों के लक्षण व अन्य नियम या रागों के संबंध में शास्त्रोक्त जानकारियाँ सभी का समाधान ग्रंथों में निहित है। प्रस्तावित शोधकार्य के अंतर्गत संस्कृत ग्रंथों में हमारा प्राचीन संगीत कैसा थाए कैसे.कैसे समयानुसार उसमें परिवर्तन हुए और आज वह किस रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है.आदि सभी विषयों के प्रति जानकारी एकत्रित करके उसे नवीन रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस शोध प्रबंध को सम्पूर्ण करने के लिए मैंने वैदिक काल से लेकर सभी प्राप्त संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को चार अध्यायों में बाँटा है. प्रथम अध्याय के अंतर्गत संगीत की उत्पत्तिए विकास एवं महत्व को बताते हुए उसके प्राचीन इतिहास की चर्चा की है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र से लेकर संगीत रत्नाकर तक के ग्रंथों की भूमिका एवं प्राचीनकालीन अन्य संस्कृत ग्रंथों में संगीत संबंधी उल्लेखों को दर्शाया गया है। तृतीय अध्याय में मध्यकाल में संगीत में हुए परिवर्तनों को दर्शाया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिक काल के संगीत पर चर्चा करते हुए संस्कृत ग्रंथों की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

विषय सूची

1. संगीत का ऐतिहासिक विकास एवं ग्रंथों की भूमिका 2.प्राचीनकाल के संगीत में संस्कृत ग्रंथों की भूमिका 3. मध्यकालीन संगीत के संदर्भ में संस्कृत ग्रंथों की उपादेयता 4. आधुनिक काल में संगीत की स्थिति एवं संस्कृत ग्रंथों की उपयोगिता। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

02. काण्डपाल (छवि)

उत्तराखण्ड के लोकवाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) अनुपम महाजन

Th 24687

सरांश

(असत्यापित)

उत्तराखण्ड अपनी प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण राज्य है। प्राकृतिक सुन्दरता के साथ ही यह देवों की भूमि भी है। पहले यह उत्तर प्रदेश का भाग था। उत्तराखण्ड में ज्यादातर पहाड़ी क्षेत्र आता है। यह स्थान अपनी धार्मिक ए सांस्कृतिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण पहाड़ी छाप यहाँ के लोकसंगीत एवं वाद्य में देखी जा सकती है। पहाड़ी संस्कार यहाँ के लोकसंगीत एवं धुनों में दिखते है। लोकसंगीत के साथ लोकवाद्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। बिना लोकवाद्यों के यहाँ का लोकसंगीत अधूरा है। लोकवाद्य इन गीतों को जीवंत कर देते है। लोकवाद्यों की सहायता से ही इन लोकगीतों को लय एवं ताल दी जाती है। उत्तराखण्ड़ में तत एअवनद्ध एघन तथा सुषिर सभी प्रकार के वाद्य पाए जाते है।कुछ वाद्य यहाँ अधिक प्रचार में है। इन वाद्यों में समय के साथ अनेक परिवर्तन भी देखे गए हैं।

विषय सूची

1. उत्तराखण्ड का भौगोलिक एवं सामाजिक अध्ययन 2. उत्तराखण्ड का लोकसंगीत 3. उत्तराखण्ड के तत् एवं अवनद्ध वाद्यों की बनावट सामग्री एवं वादन विधि 4. उत्तराखण्ड के घन वाद्यों की बनावट सामग्री एवं वादन विधि 5. उत्तराखण्ड के सुषिर वाद्यों की बनावट, सामग्री एवं वादन विधि । उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. गुप्ता (रेनू)

संगीतकार के व्यक्तित्व के कारक तत्व : एक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग एवं प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

Th 24605

विषय सूची

1. व्यक्तित्व की विशेषताएँ एवं संगीतकार का मानसिक व बौद्धिक विकास 2. संगीतकार के व्यक्तित्व निर्माण में संगीत शिक्षण का महतव एवं चिंतन 3. प्रतिष्ठित संगीतज्ञों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक कुछ प्रेरणादायक संस्मरण 4. वर्तमान संगीतज्ञों का सांगीतिक व्यक्तित्व निर्माण, विचार एवं विशिष्ट कारक तत्व । उपसंहार। संदर्भग्रंथसूची।

04. चन्द्रलता

किराना व ग्वालियर घराने की महिला गायक कलाकारों का शास्त्रीय संगीत में योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग एवं डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन

Th 24601

विषय सूची

1. शास्त्रीय संगीत में महिलाओं का योगदान और घराना परम्परा 2. किराना व ग्वालियर घराना 3. किराना घराने की महिला गायक कलाकार 4. ग्वालियर घराने की महिला गायक कलाकार। उपसंहार। चित्रावली। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. ZHAROTIA (Ajay)
Digital Dialogue: Challenges and Opportunities of Social Media for Brands in India.
Supervisor: Prof. B.S. Chauhan
Th 24611

Contents

1. Introduction 2. History of social media 3. The social media business environment 4. Brand building and social media 5. Impact of social media on brands 6. Future of social media 7. Bibliography and certificates.

06. दास (नबीन्द्र नाथ)
थाठ-राग और रागांग वर्गीकरण का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्ष : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) अनुपम महाजन
Th 24603

सरांश
(असत्यापित)

आधुनिक समय में थाट.राग वर्गीकरण तथा रागांग वर्गीकरण पद्धति एक वृहद् वर्गीकरण के रूप में विकसित हो चुकी है। इन दोनों पद्धतियों के विकास क्रम को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समय काल में इन पद्धतियों के औचित्य को उजागर करना इस शोध का उद्देश्य है। साथ ही दोनों पद्धतियों के सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक पक्ष की आवश्यकता पर भी विचार प्रस्तुत करना एवं सुझावों से परिपूर्णता देने की चेष्टा इस शोधकार्य का प्रयोजन है। इस शोधकार्य को पाँच अध्यायों के अंतर्गत विभक्त किया गया है. प्रथम अध्याय में वर्गीकरण के अर्थए महत्व एवं ऐतिहासिक विवेचन का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में थाट का ऐतिहासिक अध्ययनए भारतीय संगीत में राग वर्गीकरण के लिए थाट.राग की अवधारणा एवं थाट राग के महत्व के उपर विचार किया गया है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत दस थाटों का निर्माणए दस थाटों का ऐतिहासिक अध्ययन तथा दस थाटों के आधार पर रागों का वर्गीकरण पर अध्ययन किया गया है। अंत में थाट.राग वर्गीकरण की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में रागांग की उत्पत्तिए विकास तथा इसके महत्व के बारे में विश्लेषण किया गया है। रागांग के आधार पर रागों का वर्गीकरणए कुछप्रचलित रागों में रागांग का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में थाट राग और रागांग वर्गीकरण की समस्याएँ तथा चतुर्बिध राग.वर्गीकरण का अध्ययन किया गया है। अंत में नवीन रागों के वर्गीकरण की समस्या एवं कुछ सुझाव पर अध्ययन किया गया है। प्रत्येक अध्याय को उप अध्यायों में विभाजित करने के पश्चात् अंत में उपसंहारए परिशिष्ट तथा संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. राग वर्गीकरण 2. थाट-राग वर्गीकरण 3. आधुनिक दस थाट-वर्गीकरण 4. रागांग वर्गीकरण 5. आधुनिक समय के राग-वर्गीकरण, समस्याएँ एवं सुझाव। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

07. BORAH (Bhskkar Jyoti)
Art Meditation and Modernity: A Study Of Contemporary Vision With Traditional Representation in Indian Art From 1960-2010.
Supervisor: Prof. Amargeet Chandok
Th 24599

Abstract
(Not Verified)

Indian tradition has a unique view point on experience of sprituality in art. Traditionally, in India, spirituality is practiced in different ways. And "Meditation" is one of the main disciplines of spiritual practices to understand the ultimate reality and realize self-consciousness. In this context, Indian art has a specific viiewpoint on meditation. It was the main methodology for the creative activities. The silpi-yogi tried to visualize their mental imageries through meditation. Meditaion helps them in their visualization and intuitive vision. In this process, the silpi-yogi creates some visual imageries or mental images i.e. ideal form of deity and symbolic or primal form of abstraction to visualize Supreme Being and contemplate on it to get the spiritual experience. As has been explained, Indian tradition has a great role for meditation in art practices. Silpa-sastra gives high value to meditation as a principle or main method for creative expression to visualize the mental imageries.A study of Indian art since the middle end of 20th century shows a new form of art which is an offsping of traditional representations of meditational activities and Eastern philosophy. This art also signifies a combination of Indian traditional and modern Western artistic expression. In what follows an attempt has been made to understand and analyzes the role of meditation as it has inspired many of the contemporary artist mainly during the period 1960-2010.The present study has attempted to understand art and meditation, and tried to analyze the role of meditation in Indian art in both traditional and modern contexts regarding meditative art. Here, modernity is like a bridge between the tradtional and modern meditative art practice. It specifies the progress and shows a new form of modern meditaive art expression.

Contents

1. Introduction 2. Origin and use of mediation in Indian art 3. Meditation: a creative process of revelation 4. Meditation as new dimension in Indian art 5. Contemporary artists and their involvement in meditative art 6. Visual from of meditative art 7. Aesthetics of meditative art 8. Concluding remarks

08. रचना

मानवीय भावोद्दीपन में संगीत की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (शास्त्रीय गयान के विशेष संदर्भ में)

निर्देशक : प्रो. ओजेश प्रताप सिंह

Th 24602

सरांश

(असत्यापित)

मानव एक भावनाशील प्राणी है। सभी ललित कलाओं का संबंध भाव से है। संगीत कला को ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान किया गया है। संगीत भाव प्रकटीकरण का एक सशक्त माध्यम है। संगीत के स्वरए लय व ताल भावानुभूति तथा भावाभिव्यक्ति के सहायक तत्त्व हैंए जिनका प्रयोग कर मनुष्य परमानंद की अनुभूति करता है। प्रथम अध्याय में भाव की विवेचना के अंतर्गत भाव की व्युत्पत्तिए अर्थए भाव के प्रकारए उद्दीपन विभाव का वर्णन तथा रस की व्युत्पत्तिए रस का स्वरूपए रस के प्रकारए रस के अंगए भाव व रस का संबंध तथा भाव की विभिन्न मनोवैज्ञानिक पक्ष जैसे.संवेगए संवेदनाए व्यवहार एवं प्रक्रियाए प्रेरणा व अनुसरणए रूचिए ध्यानए चिन्तनए मनन व मानसिक स्थितिए स्मृति आदि की चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय में भावानुभूति तथा भावाभिव्यक्ति में सहायक सांगीतिक कारकों के अंतर्गत राग और भावए रागए स्वर.लगावए काकुए लयए तालए बंदिश व साहित्यए वाद्य एवं संगतकर्ताए कलाकार प्रस्तुतीकरण तथा श्रोता आदि कारकों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त ध्वनि विस्तारक यंत्र और ध्वनि अभिलेखन व मुद्रण प्रणाली का भाव से संबंधित बातांे पर चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में मानवीय भावोद्दीपन एवं राग के अंतर्सम्बन्ध में राग का समय सिद्धांतए राग की प्रकृतिए राग और ऋतुए राग भाव का प्रभाव चिकित्साए राग और रस का विस्तृत वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन की विधाएँ एवं भाव प्रकटीकरण में ध्रुपदए धमारए ख़्यालए तरानाए त्रिवटए चतुरंगए रागमालाए ठुमरीए टप्पाए भजन आदि गायन विधाओं पर प्रकाश डालते हुए कुछ रस और भाव युक्त राग आधारित बंदिशों में भाव एवं रस से संबंधित प्रयोगात्मक बंदिशों का वर्णन किया गया है। पंचम तथा अंतिम अध्याय में भावोद्दीपन मे संगीत की भूमिका के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के विचार का तथा वर्तमान समय में संगीत में भाव की स्थिति आदि का उल्लेख किया गया है।

विषय सूची

1. भाव की विवेचना 2. भावानुभूति तथा भावाभिव्यक्ति : संगीत के संदर्भ में 3. मानवीय भावोद्दीपन एवं राग का अंतर्सम्बन्ध 4. शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन की विभिन्न विधाएँ एवं भाव प्रकटीकरण 5. भावोद्दीपन में संगीत की भूमिका के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मत। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

09. राहुल प्रकाश

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ऋतुकालीन बंदिशों का सांगीतिक विश्लेषण।

निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

Th 24925

सरांश
(असत्यापित)

प्राचीन काल से ही हमें हिन्दुस्तानी संगीत में विभिन्न ऋतुओं में अलग.अलग रागों के प्रयोग का वर्णन मिलता है। यह शोध.कार्य मूल रूप से बंदिशों पर आधारित है। संगीत जगत में ऐसी अवधारणा है कि ऋतुकालीन रागों में ही ऋतुकालीन बंदिशों को निर्मिति होती है परन्तु मूल रूप में ऐसा नहीं है। ऐसे अनेक राग हैं जिनमें ऐसी ऋतुकालीन रचनाएँ प्राप्त होती है। ऐसे सभी रागों को संगीत जगत के समक्ष लाना साथ ही कुछ नवसृजित रागों में गायी जाने वाली सभी बंदिशों का साहित्यिक एवं सांगीतिक विश्लेषण करना इस शोध कार्य का मूल उद्देश्य है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम ऋतु की व्युत्पत्ति एवं स्वरूप ऋतु और मास विभाजनए पौराणिक काल से आधुनिक काल तक विभिन्न ग्रंथों में वर्णित ऋतु सिद्धांत एवं भारत में प्रचलित ऋतुओं . बसंत ग्रीष्म वर्षा हेमंत शरद एवं शिशिर ऋतुओं तथा उनमें प्रयुक्त रागों का वर्णन किया गया है। इसके उपरांत बंदिश शाब्दिक अर्थ परिभाषाएँ एवं साक्षात्कार के माध्यम से बंदिश के विषय में विभिन्न संगीतज्ञों के विचार प्रस्तुत किये गए हैं। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम साहित्य ;काव्यद्ध का अर्थ एवं परिभाषा व्यक्त की गई है। इसके उपरांत विभिन्न वाग्गेयकारों रचनाकारों एवं संगीतज्ञों द्वारा निर्मित ध्रुपद धमार एवं ख्याल की रचनाओं का साहित्यिक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम राग बसंत एवं बहार का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचन इनके प्रचलित एवं अप्रचलित प्रकारों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों की स्वरलिपि सांगीतिक विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत सर्वप्रथम मल्हार का संक्षिप्त ऐतिहासिक विवेचन मल्हार के प्रचलित एवं अप्रचलित प्रकारों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों की स्वरलिपि सांगीतिक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय के अंतर्गत ऋतुकालीन रागों के अतिरिक्त अन्य रागों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों का संक्षिप्त अवलोकन एवं उनकी स्वरलिपि प्रस्तुत की गई है। षष्ठ अध्याय के अंतर्गत नवसृजित रागों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों की स्वरलिपि प्रस्तुत की गई है।

विषय सूची

1. भारत में प्रचलित ऋतुएँ एवं उनमें प्रयुक्त राग 2. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विभिन्न वाग्गेयकारों, रचनाकारों एवं संगीतज्ञों द्वारा निर्मित ऋतुकालीन रचनाओं का साहित्यिक अध्ययन 3. बसंत एवं बहार प्रकारों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों का सांगीतिक विश्लेषण 4. मल्हार प्रकारों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों का सांगीतिक विवेचन 5. ऋतुकालीन रागों के अतिरिक्त अन्य रागों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों का संक्षिप्त अवलोकन 6. नवसृजित रागों में प्राप्त ऋतुकालीन बंदिशों का संक्षिप्त अवलोकन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

10. रेखा कुमारी
शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन की विविध विधाओं के प्रस्तुतीकरण में तबला संगति-बनारस घराने के विशेष संदर्भ में।
निर्देशिका : डॉ. (श्रीमती) सुदीप्ता शर्मा
Th 24608

सरांश
(असत्यापित)

ताल का प्रमुख साधन तबला अवनद्ध वाद्यों में सर्वाधिक ताल वाद्य है। एक से एक मुर्धन्य तबला वादक इस देश में पैदा हुए हैं। बनारस ने तो प्राचीन काल से ही महान विभूति तबला वादकों की एक शृंखला कायम कर रखी है। जिन्होंने अथक परिश्रम एवं कलाप्रतिभा द्वारा देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारत के गौरव में वृद्धि की है। आधुनिक युग में तबला.वादन के क्षेत्र में बनारस घराने की ख्याति विश्व व्यापी है। इस लोकप्रिय सशक्त और बहुआयामी घराने की वादनशैली ने अपनी पृथक श्रेष्ठता सिद्ध की है। मैंने इस शोधकार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है. प्रथम अध्याय में घराने का अर्थ एवं महत्व को विभिन्न विद्वानों के मतानुसार परिभाषित किया है। तबले में बनारस घराने की उत्पत्ति, विकास एवं घराने की वादन शैली एवं विशेषताएँ बताई गई है। द्वितीय अध्याय में संगीत का सामान्य स्वरूप, अर्थ, परिभाषा, तबला संगति का महत्व, स्थान, उपयोगिता व उद्देश्य एवं तबला संगति के विभिन्न प्रकार बताए गए हैं। तृतीय अध्याय में शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन की सभी विधाओं के साथ तबला संगति के आधार नियमों को बताते हुए बनारस घराने के गुणी तबला वादकों की इन गायन विधाओं के साथ जिस प्रकार संगत रही इसको बताया गया है। चतुर्थ अध्याय में बनारस घराने के मुर्धन्य तबला संगतकारों का जीवन विवरण एवं सांगीतिक योगदानों को बताया गया है। पंचम अध्याय में तबला संगति के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न संगीत विषयक विद्वानों के विचार एवं अवलोकन.बनारस घराने के परिप्रेक्ष्य में बताया गया है। शोध के माध्यम से जहाँ संगीत के रसिक प्रबुद्ध श्रोता संगति कला का रसास्वादन कर सकेगें वहीं विद्यार्थी एवं कलाकार गण बनारस घराने के संगति कला से लाभान्वित भी हो सकेगें।

विषय सूची

1. तबला वादन में बनारस घराने का प्रादुर्भाव 2. संगीत में तबला संगति का अर्थ, उपादेयता एवं महतव 3. शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन शैली में तबला संगति-बनारस घराने के परिप्रेक्ष्य में 4. बनारस घाराने के मूर्धन्य तबला संगतकारों का जीवन विवरण एवं उनाक सांगीतिक योगदान 5. तबला संगति के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न संगीत विषयक विद्वानो के विचार एवं अवलोकन - बनारस घराने के परिप्रेक्ष्य में। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. शर्मा (गरिमा)
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भजन गान शैली : सांगीतिक विश्लेषण एवं परिवर्द्धित आयाम (हिन्दुस्तानी संगीत के विशेष संदर्भ में)
निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी
Th 24604

विषय सूची

1. भक्ति संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विभिन्न भक्त कवियों के पदों का संक्षिप्त अवलोकन 2. भजन गान शेली एवं शास्त्रीय संगीतज्ञ - विशिष्ट रचनाओं का रागात्मक एवं तालात्मक विश्लेषण (परिवर्तन एवं परिवर्द्धन) 3. सुगम संगीत के कलाकारों द्वारा भजन गान शैली में निर्दिष्ट विभिन्न प्रयोग में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन 4. भजन गान शैली में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन - विभिन्न शास्त्रीय संगीतज्ञों, सुगम संगीत के संगीतज्ञों एवं संगीत शास्त्रियों से साक्षात्कार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

12. SHARMA (Sangharsh)
Importance of Aesthetics in Visual Communication.
Supervisor: Prof. S.N. Lahiri
Th 24610

Abstract
(Verified)

The primary objective of this research is to shed light on the impotance of aesthetics as a whole and also how its impact can make a difference in the world of visual communication. We look into various fields of design such as, web designing, architecture, scientific designing etc. howeve our primary concern is with marketing communications and advertising. Through this study we find out how much importance aesthetics hold when it comes to visual communiction in the contemporary world.The first chapter of this thesis deals with the development of aesthetic in pre-historic times. It delves into cave paintings and ancient findings to discover the root of aesthetics. From there we move on to chapter two where we discover how aesthetics can have relevance in various contexts through visual communication and discuss how that dictates the development of any design.The third chapter we look into one of the most important factors that lay the foundation for any good design, composition. Composition is what adds aesthetic value to a piece of visual communication. So we look into the aspects that dictate the flow of a composition while citing real world examples.The fourth chapter is a study on techniques that help in ideation and let designers come up with innovative solutions while staying with in the bounds of aesthetics.The final two chapters are dedicated to aesthetics in modern era and it focuses on the socio-economic impact that it has in marketing communiction in this ever changing world.To cap it off we look into an overview ofthe study and leave anargument on how we should aim to approach every piece of visual communication to get the best return out of it.

Contents

1. Introduction 2. Development of aesthetics in communication since pre historic period 3. Aesthetics in visual communication: context relevance 4. The importance of composition as an aesthetic device in visual communication 5. Innovation and ideation in communication design and aesthetics 6. Aesthetics and contemporary design 7. Aesthetical importance in contemporary period 8. Conclusion and bibliography.

13. SATYADITYA (Rajkumar)
Manipuri Nata Sankirtana: A Comprehensive Study with Special Reference to Its Music.
Supervisor: Dr. Suneera Kasliwal
Th 24609

Abstract
(Verified)

The Gouriya Vaishnav Meiteis of Manipur believes that only the Sankirtana of Jagat Mangal Shree Vishnu is the only path or channel to wash our sins and also to salvation. History is the surviving proof that the kings, the gurus, the scholars and the musicologists have contributed their parts for the promotion and theorisation of this particular art form. Sankirtana is the heart of the ceremony. A ceremony without Sankirtana is said to be an incomplete one. The term Raga in Nata sankirtana has a different explanation. It is planted as a fixed composition where there is no freedom to improvise. The raga has different parts in a sankirtana, each having an importance in the completion of Sankirtana Mahayagya. Nata sankirtana is not only the music, it is not the dance drama but it is a Mahayagya, where the yagya is performed with the help the music, each part of the music having a philosophical meaning, where there are strict rules and regulations to be followed not by the palas but also by the onlookers and listeners, where every pala have a role, the role of god, where the lord is created with their creative imagination by using the musical phrases and sounds., The raga of Manipuri Nata sankirtana have three sections which are Ghor, pancham and dirgha. The pung raga and the vocal raga go side by side in the fulfilment of the objective of organising or performance of a sankirtana. The research is given emphasis on the musical notations of the ragas and raginis used in Nata Sankirtana and the structure of the talas.

Contents

1. Brief description of the major forms of Manipuri music 2. Nata sankirtana 3. Varieties of sankirtana 4. Ragas of nata sankirtana 5. Talas of Nata sankirtana 6. Schools and institutional of Manipuri sankirtana 7. Musical instruments used in Nata sankirtana 8. Biographies of famous nata sankirtana gurus 9. Conclusion .Bibliography and Appendix.

14. सिंह (नेहा)
पं. नारायण राव व्यास की ध्वनि-मुद्रिकाओं का सांगीतिक विश्लेषण : एक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) सुनीरा कासलीवाल व्यास
Th 24600

विषय सूची

1. ग्वालियर घराना एवं पं. नारायणराव व्यास 2. ध्वनि मुद्रण तकनीक का विकास व भारतीय संगीत में उसकी भूमिका 3. पं. नारायणराव व्यास के शास्त्रीय ध्वनि मुद्रित रिकॉर्ड्स व उनका विश्लेषण 4. पं. नारायणराव व्यास के उपशास्त्रीय ध्वनि मुद्रित रिकॉर्ड्स व उनका विश्लेषण। उपसंहार। चित्र वीथी। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

15. सूद (राधा)
रागमाला चित्रकला में निरूपित रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन : (हाड़ौती एवं मारवाड़ शैलियों के विशेष संदर्भ में)।
निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) अलका नागपाल
Th 24606

सरांश
(असत्यापित)

ललित कलाओं में से चित्रकला भावों व विचारों को अभिव्यक्त करने का अच्छा साधन है। ृरागमाला' चित्रकला ऐसी चित्रकला है जिससे संगीत व चित्रकला का संबंध ज्ञात होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का मुख्य आधार राग है। जिसका चित्रण रागमाला चित्रों में होता है। रागमाला चित्रपरम्परा वास्तव में रागों के राग.रागिनी वर्गीकरण पर आधारित है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को 7 अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में कला की उत्पत्ति व विकास के विषय में बताया गया है। कला का वर्गीकरण व कला का ललित कलाओं से संबंध किस प्रकार है इसके विषय में बताया है। द्वितीय अध्याय में विभिन्न ग्रंथकारों के अनुसार राग की परिभाषा किस प्रकार से है इस संदर्भ में जानकारी दी गई है। अंत में राग.रागिनी वर्गीकरण के विषय पर चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में चित्रकला के इतिहास और विभिन्न शैलियों के विषय में बताया है। चित्रकला में प्रागैतिहासिक काल से लेकर अपभ्रंश शैली के विषयों के बारे में चर्चा की गई है। पहाड़ी व दक्षिण चित्रकला के विषय पर चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में राजस्थान की चित्रकला और उसकी विभिन्न शैलियों की चर्चा की गई है। राजस्थानी चित्रकला के मुख्य चित्रण विषय क्या रहे है इस विषय पर बताया है। पंचम अयाय में हाड़ौती शैली के विषय में बताते हुए उसकी उप.शैलियों के विषय में बताया है। षष्ठम् अध्याय में मारवाड़ शैली के विषय में विस्तार पूर्वक वर्णन करके उसकी उप.शैलियों व उसमें चित्रित रागमाला चित्रों के विषय में बताया है। सप्तम अध्याय में दोनों शैलियों के चित्रों में वर्णित रागों की तुलना करके रागमाला चित्रों में संगीत का तत्व और वाद्यों का वर्णन किया गया है। उपसंहार और परिशिष्ट के अंतर्गत चित्रों को दर्शाते हुए संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

विषय सूची

1. कला का अर्थ, उत्पत्ति एवं विकास तथा कला का वर्गीकरण 2. भारतीय संगीत में राग एवं राग वर्गीकरण 3. चित्रकला का इतिहास व अन्य चित्र शैलियाँ 4. राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ 5. हाड़ौती शैली की चित्रकला 6. मारवाड़ शैली की चित्रकला 7. हाड़ौती एवं मारवाड़ चित्रों में वर्णित रागों की तुलना एवं वर्णित वाद्य। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।